Beginning of Civilization in India(Part-4)

For U.G. Part-1,Paper-1

पुरापाषाण कालीन लोगों का जीवन यापन

- पुरापाषाणयुगीन समुदाय चट्टानों और गुफाओं के अतिरिक्त वृक्षों की टहनी, पत्तों तथा अन्य सामग्रियों से बने घरों में निवास करते थे। **भीमबेटका** और **हुसंगी** जैसे स्थानों पर इसके प्रमाण मिलते हैं। ऐसे स्थलों से स्थाई जीवन शैली प्रतिबिंबित होती है। कुछ ऐसे भी स्थल मिले हैं जहां अस्थाई शिविर का संकेत मिलता है। यहां लोग वर्ष के कुछ खास महीने रहते होंगे और फिर आगे बढ़ जाते होंगे।
- पुरापाषाणकालीन का मानव **आखेटक और खाद्य संग्राहक** था। इस काल के मानव को **कृषि का ज्ञान नहीं** था। इस कारण से वह वनों से प्राप्त फल फूल, आखेट में मारे गए पशु ,नदियों एवं झीलों से पकड़ी गई मछलियों आदि पर निर्भर था। पुरापाषाण युग इन बस्तियों में भारतीय और विदेशी मूल के जानवरों(ऊंट, घोड़े, दरियाई घोड़ा, हाथी) के अवशेष बड़ी मात्रा में प्राप्त हुए है।

Scanned with CamScanner

- इस काल में **पशुपालन की शुरुआत नहीं** हुई थी । इस काल के मानवों को **अग्नि का ज्ञान** हो गया था परंतु वे उसके उपयोग से परिचित न थे अतः वे कच्चे मांस का भक्षण करते थे। कंद मूल, फल एवं पशुओं के शिकार ऋतु चक्र पर आधारित रही होगी।

- आत्मरक्षा मनुष्य का सर्वोपरि लक्ष्य था फलतः पर्वत कंदरायें, नदियों के कगार तत्कालीन लोगों के शरण स्थली बने। हिंसक पशुओं से रक्षा हेतु सामूहिक कार्य करने की भावना का विकास हुआ।
- अभी तक **वास्तुकला, मृदभांड कला का विकास नहीं** हुआ था। पुरापाषाण कालीन लोगों की सृजनात्मकता उनके द्वारा निर्मित हथियारों एवं औजारों में प्रकट हुईं। पाषाण निर्मित औजार इस काल की क्रांतिकारी घटना थी।
- इस काल के लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक भावना का उदय नहीं हो पाया था।
- वे शव को दफनाते नहीं थे बल्कि इधर-उधर फेंक देते थे।

Scanned with CamScanner

- उस समय के मानव के रहन-सहन तथा सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति आदि मानव द्वारा बनाए गए चित्रों से होती है। सर्वाधिक प्राचीन चित्रकारी पुरापाषाणयुगीन भीमबेटका में देखने को मिलती है। यहां **243** प्रागैतिहासिक शैलाश्रय हैं। प्रारंभिक चित्रों में **हरे एवं गहरे लाल रंगों** का उपयोग हुआ है । **भैंस, हाथी, बाघ, गैंडे** और **सुअर** के चित्र विशेष रूप से देखे गए हैं। कुछ चित्रों की लंबाई **2** से **3** मीटर तक है। खुदाई और चित्रकारी से पता चलता है कि शिकार ही जीवन यापन का मुख्य साधन था। इन चित्रों में बनी शारीरिक संरचना के आधार पर पुरुष और स्त्री में आसानी से भेद किया जा सकता है साथ ही

चित्र 2.10: **भीमबेटका : वराह का चित्र**
(न्यूमेयर, 1983)

Scanned with CamScanner

साथ इन चित्रों से यह भी पता चलता है कि पुरापाषाण युग के लोग छोटे-छोटे समूहों में रहते थे और उनका जीवन निर्वाह पशुओं एवं पेड़ पौधों पर निर्भर था।

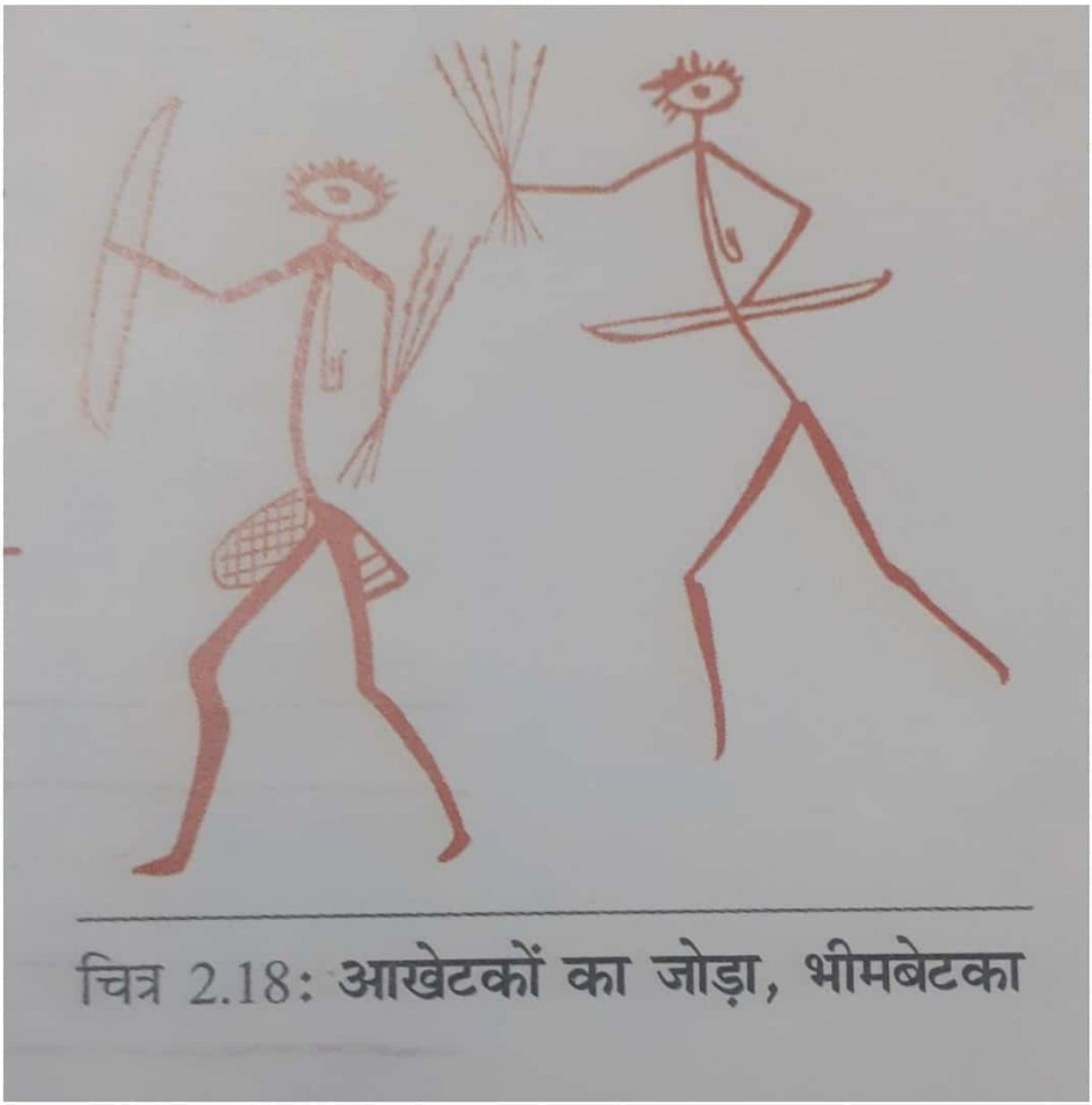

चित्र 2.18: आखेटकों का जोड़ा, भीमबेटका

Scanned with CamScanner

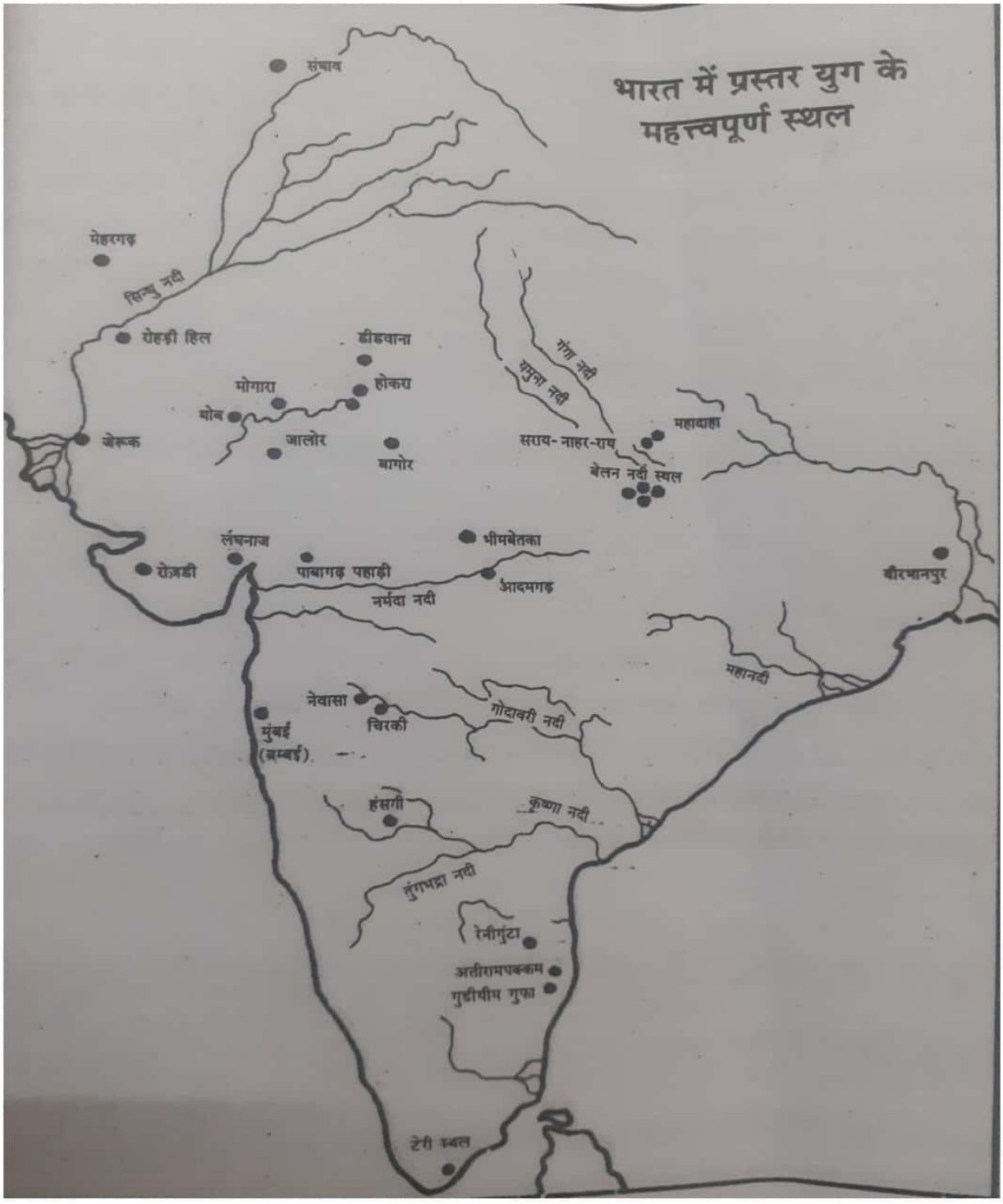

BY ARUN KUMAR RAI

Asst.Professor,Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner